प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ आठ दिवसीय शिक्षक -प्रशिक्षण कार्यशाला

दिनांक: 4 जून – 10 जून

समय: दोपहर 1:00 बजे से 5:00 बजे तक

प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ, जबलपुर, परम पूज्य संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज की दिव्य प्रेरणा से संचालित है। यहां छात्राओं को मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान की जाती है। इस परिसर में दिनांक 4 जून से 10 जून 2025 तक पांचों प्रतिभास्थली (जबलपुर, चंद्रगिरी, रामटेक, इंदौर एवं ललितपुर) की 125 शिक्षिकाओं हेतु 8 दिवसीय शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षिकाओं के शिक्षण कौशल का परिमार्जन, संवर्धन, पुनरावर्तन, कक्षा शिक्षण की प्रभावशीलता में वृद्धि तथा रचनात्मक और आनंदपूर्ण कक्षा – कक्ष का निर्माण करना था।

✨ उद्घाटन समारोह

कार्यशाला का शुभारंभ 4 जून को अपराह्न 1:00 बजे विद्यालय के संस्थापक परम पूज्य संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के पावन छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के साथ हुआ। संपूर्ण वातावरण सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण था। प्रधानाचार्या सुश्री नीरज जैन ने सभी प्रतिभागी शिक्षिकाओं का स्वागत करते हुए छात्राओं के सतत एवं सर्वांगीण विकास की आवश्यकता पर बल दिया।

🎓 अधिगम प्रेरक एवं कार्यशाला प्रारूप

प्रशिक्षण सत्रों का संचालन प्रतिभास्थली की कुशल, अनुभवी एवं **प्रौढ़** शिक्षिकाओं एवं प्रधानाचार्या के मार्गदर्शन में किया गया। प्रशिक्षण पद्धति को संवादात्मक, विश्लेष्णात्मक और चिंतनशील बनाते हुए प्रतिदिन एक विशेष विषय पर केंद्रित किया गया, जिसमें सैद्धांतिक ज्ञान और व्यवहारिक शिक्षण गतिविधियाँ सम्मिलित रहीं।

📚 प्रशिक्षण के प्रमुख विषय:

1. **शिक्षण पद्धति एवं कौशल**
2. **अधिगम एवं शिक्षण शास्त्र**
3. **विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित शिक्षा (STEM)**
4. **मूल्यांकन एवं आंकलन को सुदृढ़ बनाना**
5. **योग्यता आधारित शिक्षा (CBE)**
6. **जीवन कौशल (मूलभूत और उन्नत)**
7. **आनंदपूर्ण कक्षा-कक्ष**
8. **रचनात्मक और समालोचनात्मक चिंतन**

🎉 समापन समारोह

10 जून को कार्यशाला का समापन प्रधानाचार्या सुश्री नीरज जैन के प्रेरणादायक उद्बोधन के साथ हुआ। उन्होंने शिक्षिकाओं की सक्रिय भागीदारी और उत्साह की सराहना की। प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए एवं सभी का आभार व्यक्त किया गया। अंत में यह संकल्प लिया गया कि इस प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को आगामी शैक्षणिक सत्र में प्रभावशाली ढंग शिक्षण में क्रियान्वित किया जाएगा।

"यहाँ जीवन का निर्वाह नहीं, निर्माण होता है।"